30 मार्च, 2018 को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह तथा इंदौर में सिन्थेटिक एथलेटिक्स ट्रैक के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह और मेरे अपने शहर इंदौर में सिंथेटिक एथलेटिक्स ट्रैक के उद्घाटन समारोह में आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इंदौर शहर और यहां के लोग मेरे दिल के बहुत करीब हैं। उनके विश्वास और आस्था से मुझे इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए अथक प्रयास करने की ऊर्जा मिलती है।

2. जैसा कि आप जानते हैं, जनसंख्या की दृष्टि से इंदौर मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है और बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से विकसित होता महानगर है। अभी हाल ही में इस शहर ने स्वच्छता सर्वे में ''देश के सबसे स्वच्छ शहर' का प्रतिष्ठित पुरस्कार पाया है। इसके लिए आप सभी इन्दौरवासी बधाई के पात्र हैं।

3. इन्दौर शोध और शिक्षा, कला और संस्कृति तथा मीडिया और फैशन के क्षेत्र में पूरे देश में नाम कमा रहा है। देश के कोने–कोने से लोग यहां आए हैं और शिक्षा और नौकरी के लिए यहीं बस गए, जिससे यहां की संस्कृति विविधतापूर्ण हो गई है। इसके परिणामस्वरूप इंदौर शहर की संस्कृति को सही मायने में महानगरीय संस्कृति कहा जा सकता है।

4. जिस प्रकार भिन्न–भिन्न फूलों से मिलकर फूलों का गुच्छा बनता है उसी प्रकार यहां पर भारत की विविधतापूर्ण संस्कृतियों का अनूठा संगम हुआ है। यहां पर विभिन्न क्षेत्रों एवं भाषा बोलने वाले लोग मिल–जुलकर रहते हैं। इंदौर वास्तव में भारत की सांझी सांस्कृतिक विरासत है एवं यह अनेकता में एकता का प्रतीक है।

5. किसी भी राष्ट्र के लिए राष्ट्र निर्माण, उन्नति एवं स्वाभिमान अर्जित करने के लिए शिक्षित एवं समर्थ नागरिक बुनियादी आवश्यकता है और शिक्षित एवं समर्थ नागरिक निर्माण में समाज के अतिरिक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा और शिक्षा नीति की होती है। जब मैं आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा पर चिन्तन करती हूं, तो कई बातें मेरे मन मस्तिष्क में एकाएक आती हैं। Access and Equity to quality education are the two prime pillars of a good education system:–

क. पहुंच (Access)– अच्छी शिक्षा हर विद्यार्थी और नागरिक की पहुंच के भीतर होना चाहिए। यह इस सिद्धान्त पर आधारित है कि हर व्यक्ति के लिए शिक्षा affordable हो।

ख. समता (Equity) – अच्छी शिक्षा न केवल सबकी पहुंच में हो बल्कि सभी को समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। अच्छी शिक्षा पर किसी वर्ग विशेष या शक्तिशाली समूह का वर्चस्व न हो।

ग. गुणवत्ता (Quality)– शिक्षा की गुणवत्ता ऐसी होनी चाहिए जो न केवल उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाए। साथ ही एक आदर्श विश्व नागरिक भी बनाए।

घ. प्रासंगिकता (Relevance) – शिक्षा ऐसी हो जो पूरे विश्व में उपयोग में लाई जा सके। शिक्षा के पाठ्यक्रम को समय, स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृति एवं सामयिक जीवन शैली के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। अध्ययन हेतु विषयों का चयन ऐसा हो, जो विद्यार्थियों के करियर को संपुष्ट (nourish) करने के साथ–साथ उनमें समुचित ज्ञान और उसके प्रति अभिरूचि (Interest) पैदा कर सके।

6. वर्तमान में भारत में गुणकारी शिक्षा देने की जरूरत है जिससे छात्र प्रतिभा विकसित हो। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ है विचार (ज्ञान), संस्कार (भावात्मक उत्थान) तथा रोज़गार (श्रम आधारित अर्जन) देने वाली शिक्षा। प्राइमरी स्तर पर वरीयता संस्कार को, सेकेंडरी स्तर पर वरीयता रोज़गार (skill development) तथा विश्वविद्यालय स्तर पर विचार या ज्ञान को मिलनी चाहिए। हर स्तर पर तीनों का मेल रहना आवश्यक है। Head, Heart and Hand की शिक्षा पर बल दिया जाए और इसका वरीयता क्रम होना आवश्यक है।

7. शिक्षा ऐसी हो जो नागरिकों को स्वावलम्बी एवं सामर्थ्यवान बनाये और विशेष दक्षता (skill development) एवं उद्यमिता के गुणों से सम्पन्न बनाएं ताकि वह सम्मान के साथ अपने लिए अर्थोपार्जन कर सके। अभी हाल ही में मैंने अखबार में पढ़ा कि कहीं कुली की भर्ती के लिए ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट तथा उससे भी ऊपर की डिग्री हासिल किए हुए अभ्यर्थी ने आवेदन किया। इससे यह प्रतीत होता है कि उच्च शिक्षा वाले छात्र उचित रोजगार के अभाव में अपनी शिक्षा से परे कार्य करने के लिए विवश हैं।

8. एक ख्याल और मेरे मन में आता है जो मैं आपसे साझा करना चाहूंगी कि बेशक ग्लोबलाइजेशन का युग हो और संसार सिमट कर छोटा हो गया हो पर फिर भी हमारी शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए जो हमारी आने वाली पीढ़ी को टेक्नॉलॉजी के लाभ देने के साथ–साथ उन्हें अपनी संस्कृति और संस्कार से जोड़े रखे। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में Education is a process by which character is formed, strength of mind is increased, and intellect is sharpened, as a result of which one can stand on one's own feet.

9. हमारे यहां शिक्षा अर्थोपार्जन के साथ–साथ उच्च चरित्र, समाज और राष्ट्र के लिए संवेदना और समर्पण और सही कर्तव्य पथ पर गमन शिक्षा के माध्यम से आता था। कई बार ऐसा महसूस होता है कि शिक्षा में उन शाश्वत मूल्यों के प्रति आग्रह कम हो रहा है जो संस्कृत वांड़मय में यत्र–तत्र विखरे पड़े हैं और जिनके कारण भारतीय संस्कृति सदैव महिमामंडित होती रही है। इस पर चिंतन करना होगा और अपनी शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा पर अधिक बल देना होगा।

10. शिक्षा के परंपरागत ढांचे के बाहर जाकर कार्य करने की आवश्यकता है। Innovative ideas शिक्षा पद्धति की दशा और दिशा बदल सकते हैं। Innovation is change that unlocks new values. In fact, it distinguishes between a leader and follower. प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन ने कहा थाः– "Imagination is more important than knowledge. Knowledge is limited. Imagination encircles the world."

11. अपने आस–पास की समस्याओं के निराकरण के लिए अपने परिवेश में Innovative सोच, Imagination और संवेदनशीलता विकसित करने के लिए शिक्षा प्रणाली सहायक हो, यह आवश्यक है। उदाहरण के लिए हम सब जानते हैं कि कृषि क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिला कामगारों की संख्या ज्यादा है। मुझे नहीं लगता है कि women friendly tools विकसित करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों एवं शोध संस्थानों की सोच एवं प्रयास हो पाए हैं। हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या कारण हैं कि हमारे उच्च शिक्षा संस्थान नए पेटेंट रजिस्टर कराने में उतने सफल नहीं हो पाते हैं जितने कि उनसे अपेक्षा है और क्यों वे अपने

गांव, शहर, प्रदेश एवं देश की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए स्थानीय स्तर पर Innovative solutions लेकर नहीं आ पाते हैं। कुछ एक Innovative products के उदाहरण के रूप में हमारे सामने आए हैं लेकिन व्यावसायिक रूप से उन्हें हम सफल product बनाकर प्रस्तुत नही कर पाएं हैं।

12. नई सोच, नए साधन एवं नए Innovation में हमारा देश, हमारे शिक्षा संस्थान कैसे नेतृत्व कर सकते हैं और देश की समस्याओं के समाधान के लिए क्या कर सकते हैं। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने एवं सृजनात्मक वातावरण में अन्वेषण की भावना एवं मौलिक सोच विकसित किया जाना चाहिए। मैं यहां उपस्थित सभी शिक्षाविदों से अनुरोध करूंगी कि इस दिशा में वे अपनी सोच और सुझाव दें।

13. शिक्षकों की बात किए बगैर शिक्षा की बात अधूरी है। बचपन से हम सबने यह अवश्य सुना होगा कि **''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाएं, बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दियो बताए।''** बिना अच्छे शिक्षक के सान्निध्य के कई मायनों में शिक्षा अधूरी है। आधुनिक युग के बदलते परिवेश में शिक्षक और छात्र के संबंध भी बदले हैं। पर मेरा यह मानना है कि इनके बीच एक भावनात्मक संबंध भी छात्र को संबल देकर उसे कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस देता है।

14. आज शिक्षण व्यवसाय में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो स्वतः आना चाहते हैं। इसका कारण यह भी है कि हमारी परंपराओं के विपरीत समाज में उनके प्रति आदर और समर्पण के भाव में कमी आ गई है। आधुनिक युग में हो रहे क्रांतिकारी परिर्वतनों को देखते हुए शिक्षकों की भूमिका को बदलते सामाजिक मूल्यों के आधार पर पुनः परिभाषित करना होगा, जिससे

आने वाले परिवर्तनों के संबंध में चुनौतियों को स्वीकार किया जा सके। शिक्षण पद्धति में Innovation से qulitative and quantitative दोनों लेवल पर सुधार होगा।

15. वर्तमान में हमारे देश में लगभग 36000 कॉलेज हैं। इन विश्वविद्यालयों में लगभग 2 करोड़ दाखिले हर वर्ष होते हैं जिनमें से मात्र एक प्रतिशत ही research and development के क्षेत्र में जाते हैं। यह आंकड़ा बहुत ही कम है। 58 प्रतिशत महाविद्यालय प्राइवेट सेक्टर में हैं। एक चौंकाने वाला आंकड़ा यह है कि प्राइमरी से सेकेंडरी स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 50 है जबकि सेकेंडरी से हायर स्तर पर स्कूल छोड़ने वालों का प्रतिशत 37 प्रतिशत है। इसी प्रकार, हायर स्तर से कॉलेज जाने वाले छात्रों के स्कूल छोड़ देने का प्रतिशत 20 प्रतिशत है। भारत में 18 से 23 वर्ष के बीच के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में Gross Enrolment Ratio 20.4 प्रतिशत है जबकि संपूर्ण विश्व में यही Gross Enrolment Ratio 30 प्रतिशत है। अर्थात् GER को वैश्विक स्तर के अनुरूप लाने के लिए हमें कम से कम 2000 नए विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।

16. इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में संसाधन की आवश्यकता होगी और प्राइवेट सेक्टर और सरकारी सेक्टर दोनों को मिलकर काम करना होगा, तभी विश्व के अच्छे विश्वविद्यालयों में भारत के विश्वविद्यालयों का नाम आ सकेगा और पूर्व की भांति विदेशों से विद्यार्थी यहां अध्ययन के लिए आकर्षित होंगे। भारतीय विद्यार्थियों में विदेशी शिक्षा के प्रति आकर्षण है और यह आकर्षण हमारी अर्थव्यवस्था से करीब 80,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष निकलकर दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था में जुड़ जाता है।

17. हमें अपने उच्च शिक्षा संस्थानों को विश्व के सर्वोच्च संस्थानों में शामिल करने के लिए शिक्षा की विषय–वस्तु और गुणवत्ता में आमूल–चूल सुधार करने होंगे। शोध, कौशल विकास,

उद्यमिता, व्यावसायिक निर्माण एवं उसकी उपयोगिता पर बहुत बल देना होगा। यह एक विरोधाभास है कि हमारे देश में जहां इंजीनियर्स और प्रोफेशनल डिग्री होल्डर को रोजगार नहीं मिलता है, वहीं उद्योग जगत के लोग कहते हैं कि उन्हें अच्छे skilled employee आसानी से नहीं मिलते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमारी शिक्षा पद्धति में कहीं कोई रिक्तता है जिसके कारण उद्योग जगत और विद्यार्थियों के बीच में फासला है। इस फासले को कम करने के लिए उद्योग जगत एवं शिक्षा जगत में सुदृढ़ अंतरसंवाद एवं सामंजस्य होना चाहिए और एक दूसरे के आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता होनी चाहिए। लेकिन महत्वपूर्ण यह भी है कि इतनी बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षा संस्थानों के पास संसाधन कहां से आएंगे। सरकार एवं निजी क्षेत्र की सीमाएं हैं। हमें इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि हमारे शिक्षा संस्थान कैसे संसाधनों के मामले में स्वावलम्बी एवं स्वनिर्भर हो सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षा की पहुंच गरीब एवं मध्यम वर्ग की affordability भी हो। जैसे विदेशी विश्वविद्यालयों में endowment fund, alumni donation, सफल शोध कार्यों से अर्जित आमदनी एवं यूनिवर्सिटी की परिसंपत्तियों के कुशल व्यावसायिक संचालन से अर्जित धनराशि के माध्यम से वे अपने सारे खर्चों को सफलतापूर्वक वहन करते हैं। उसी तर्ज पर, मैं शिक्षा जगत से आह्वान करूंगी कि वे इस प्रश्न पर गंभीरता से चिंतन करे और कुछ मौलिक सुझावों के साथ आगे आएं।

18. Todays world is technology driven world and technology is developing and changing very rapidly to make permanent changes in our lives, our social behaviour, closure of several traditional businesses, yet creation of totally new and innovative

business opportunities. हमें इस टेक्नोलॉजी को अपनी शिक्षा के प्रचार–प्रसार और उन्नयन के लिए उपयोग करना चाहिए। Distance Education, Edusat ये आधुनिक तकनीक के साधन है जिसके माध्यम से सुदूर गांवों तक न केवल शिक्षा पहुंच सकती है बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुधार सकते हैं।

19. शिक्षा के सशक्तिकरण के लिए मानव संसाधन मंत्रालय ने विद्यांजलि स्कीम लांच की है जो कि एक स्कूल वोलंटियर प्रोग्राम है। जिसके तहत कोई भी व्यक्ति अपने क्षेत्र के स्कूलों में एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे सकता है। इसमें कई नामी गिरामी हस्तियों ने अपना enrolment कराया है जिनमें प्रख्यात डॉक्टर, इंजीनियर, खिलाड़ी, नेता एवं सेना के रिटायर्ड अधिकारी शामिल हैं जैसे अनिल कुम्बले, लता मंगेशकर, सचिन तेंदुलकर, वेंकैया नायडू इत्यादि। इससे न केवल विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती हैं बल्कि वे उनके जीवन के अनुभवों से लाभान्वित होते हैं।

20. मेरा मानना है कि हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हममें अनुशासन, प्रतिबद्धता, सहनशीलता और संवेदनशीलता जैसे गुणों का विकास कर सके जो एक स्वस्थ समाज का आधार है। मैं अपने युवा मित्रों को याद दिलाना चाहती हूं कि किसी राष्ट्र का भविष्य उसके नागरिकों के चरित्र से ही बनता है।

हम सब आधुनिक युग में शिक्षा के महत्त्व से भलीभांति परिचित हैं। शिक्षा निस्संदेह सबसे बड़ी पूँजी है। मैं संस्कृत का एक श्लोक उद्धृत करना चाहूंगी जो इस प्रकार है :

''न चोरहार्यम् न च राजहार्यन, भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।

व्यये कृते वर्धते एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम ।।''

इस श्लोक में कहा गया है कि विद्या धन सबसे बड़ा धन है। इसे न तो चोर चुरा सकते हैं और न ही राजा इसका हरण कर सकते हैं। इसे भाइयों में बांटा नहीं जा सकता पर इसे जितना खर्चो, यह उतना ही बढ़ता है। इसलिए हमें हमेशा सीखते रहना चाहिए, अपना ज्ञान सबके साथ बांटना चाहिए और इसका उपयोग समाज के हित के लिए करना चाहिए।''

21. मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगी कि कड़ी मेहनत, ईमानदारी और लगन बहुत जरूरी है। हमारे समाज में गुरु को भगवान के समान माना जाता है। छात्रों को अपने अध्यापकों का आदर-सम्मान करना चाहिए। दूसरी ओर अध्यापको को भी यह बात समझनी चाहिए कि देश का भविष्य छात्रों को प्रदान की जा रही शिक्षा और मूल्यों पर निर्भर करता है। मैं समझती हूँ कि आधुनिक विज्ञान और नैतिक मूल्यों से सम्पन्न मजबूत शैक्षिक प्रणाली से हमें अपने देश को विश्व समुदाय में उचित स्थान दिलाने में मदद मिलेगी।

22. मैं उन सभी छात्रों को बधाई देती हूं जिन्हें डिग्रियां और प्रशस्ति पत्र दिए जा रहे हैं और ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि आप सभी अपने करियर में सफलता की ऊंचाईयों को छुएंगे। आप न केवल अपने विश्वविद्यालय बल्कि समाज और देश के कल्याण में भी अपना योगदान करते रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की फैकल्टी के सभी सदस्यों, अधिकारियों और छात्रों को शुभकामनाएं देती हूं और देश की सेवा में उनके सभी प्रयासों की सफलता की मंगल कामना करती हूं।

धन्यवाद।

———————